Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कालिदास एवं वर्डज्वर्थ : पारस्परिक तुलना

डॉ. हिमांशु शर्मा*

* उपप्राचार्य, प्रभाशंकर पंड्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, परतापुर-बांसवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – साहित्य के क्षेत्र में कालिदास (संस्कृत)और वर्डज्वर्थ (अंग्रेजी) में दो ऐसे महान कवि हैं, जिन्होंने अपनी अपनी भाषाओं और संस्कृतियों में काव्य की नई ऊंचाइयां स्थापित की। दोनों ने प्रकृति, मानव- मन और भावनाओं को अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया किंतु उनके दृष्टिकोण, शैली और काव्य दर्शन में कई समानताएं और भिन्नताएं भी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में दोनों कवियों की सामाजिक चेतना की तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जो शोध पत्र के लिए आधार प्रदान करता है। इस शोध से यह अपेक्षित है, कि यह कालिदास और वर्ड वर्थ के साहित्यिक योगदान की गहरी समझ विकसित करने में सहायक होगा। उनके प्रकृति प्रेम, मानवीय भावनाओं के चित्रण, काव्य शैली और दार्शनिक दृष्टिकोण की तुलना करके दोनों कवियों के बीच की साहित्यिक संवाद को स्पष्ट करता है। यह सोच भारतीय और अंग्रेजी साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

शोध के उद्देश्य :

1. कालिदास और वर्डज्वर्थ की रचनाओं में सामाजिक चेतना की तुलना करना और विश्लेषण करना कि दोनों कवियों में किस प्रकार सामाजिक चेतना अनुभव किया और अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया।
2. दोनों कवियों की रचनाओं में प्रेम और मानवीय संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. दोनों कवियों की रचनाओं में निहित दार्शनिक और आध्यात्मिक विचार क्या है ? का अध्ययन करना।

शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से तुलनात्मक साहित्यिक विश्लेषण पद्धति पर आधारित होगा इसके अंतर्गत :

1. प्राथमिक स्रोतों का अध्ययन कालिदास की प्रमुख रचनाओं और वर्डज्वर्थ की प्रमुख कविताओं का मूल पाठ और विश्वसनीय अनुवादों के माध्यम से गहन अध्ययन किया जाएगा।
2. द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया जायेगा।
3. तुलनात्मक विश्लेषण प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन के आधार पर शोध तथ्यों के संदर्भ में दोनों कवियों की रचनाओं के विभिन्न पहलुओं का व्यवस्थित तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

सामाजिक चेतना – संस्कृत साहित्य के अलौकिक नक्षत्र, सरस्वती के वरद् पुत्र महाकवि कालिदास एवं अंग्रेजी साहित्य को नवीन दिशा देने वाले स्वच्छन्दतावादी कवियों में अग्रगण्य प्रकृति के अनन्योपासक विलियम वर्ड्ज्वर्थ की कृतियों में अनेक प्रकार से साम्य दृष्टिगोचर होता हैं। दोनों महाकवियों की कृतियों में सामाजिक चेतना, प्रकृति चित्रण, एकान्त प्रियता, कल्पना शक्ति, भावुकता, परिवेशगत वर्णना (नगर एवं ग्राम्य) एवं प्रगतिशिलता आदि के दर्शन होते हैं। दोनों कवियों की कृतियों में सामाजिक चेतना स्पष्ट रुप से दिखाई देती है जो निम्न रुप से है –

कालिदास की कृतियों में सामाजिक चेतना– महाकवि कालिदास के अद्वितीय रुपक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पदे पदे सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं, जो निम्न रूपेण है :-

कृष्णमृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यन्त ने जैसे ही बाण का सन्धान किया, वैसे ह.....

आश्रम में सदैव विनीत वेश में ही प्रवेश करना चाहिए। महाकवि कालिदास ने इस स्थिति को स्पष्ट किया है कि विनयशीलता जीवन में परमावश्यक है एवं अपने से बड़ों के पास सदैव विनय युक्त भाव से ही रहना और जाना चाहिए। अत: दुष्यन्त भी अपने अस्त्र-शस्त्र को रथ में रखकर विनय युक्त भाव से तपोवन में प्रवेश करते है। विनीत वेषेण

प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि नाम ।

महाकवि ने 'सादा जीवन उच्च विचार' इसके दर्शन शाकुन्तलम् में करवाये है। शकुन्तला अलौकिक सौन्दर्य से युक्त है, फिर भी उसने मात्र वल्कल वस्त्रों को ही धारण किया है। ये वल्कल वस्त्र ही उसकी शोभा को और बढ़ा रहे हैं, क्योंकि सुन्दर व्यक्ति के लिए सभी वस्तुएँ उसकी शोभा बढ़ाने वाली ही होती हैं।

इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।।

शाकुन्तलम् में कालिदास ने विवाह कर्म को भी जाति में करना श्रेयस्कर माना है। उस काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार जातियाँ थी। दुष्यन्त द्वारा क्षत्रिय कन्या से ही विवाह सामाजिक स्थिति में मर्यादित था। अत: सर्वप्रथम दुष्यन्त शकुन्तला की जाति ज्ञात कर ही उसे अपने योग्य मानते है।

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा, यदार्यमस्यामभिलाषि मे मन: ।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु, प्रमाणमन्त: करणप्रवृत्तय: ।।

भारतीय परम्परा में अतिथि को देवतातुल्य माना जाता है। यहीं सामाजिक मर्यादा है कि हम उस अतिथि का उचित आतिथ्य सत्कार करें।

कालिदास ने उसी लौकिक व्यवहार को उद्घाटित किया है। सखियों द्वारा दुष्यन्त का आतिथ्य सत्कार किया गया है।

इदानीमतिथि विशेष लाभेन। हलाशकुन्तले, गच्छोटजम्।
फलमिश्रमर्घ्यमुपहर। इदं पादोदकं भविष्यति।

शकुन्तला के विषय में सम्पूर्ण जानकारी सखियों से प्राप्त कर दुष्यन्त शकुन्तला को अपने योग्य मानते है। जब शकुन्तला दुष्यन्त के पास से जाना चाहती है, तब दुष्यन्त शकुन्तला को पकड़ना चाहते है। कालिदास ने यहाँ दुष्यन्त को रोककर सामाजिक मर्यादा का पालन करवाया है।

अनुयास्यन् मुनितनयां सहसा विनयेन वारित प्रसरः।
स्थानादनुच्चलन्नपि गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः॥

शकुन्तला की दोनों सखियों एवं दुष्यन्त के मध्य शकुन्तला को लेकर इतना विचार-विमर्श होने के उपरान्त भी कालिदास ने स्त्रियोचित लज्जा नामक आभूषण से युक्त ही शकुन्तला को बताया है। शकुन्तला सर्वत्र दुष्यन्त के साथ मर्यादित व्यवहार ही सम्पादित करती है। दुष्यन्त को यह आभास तक नहीं हो पाता कि शकुन्तला उस पर आसक्त है या नहीं। कालिदास ने शकुन्तला को उत्कृष्ट नारी व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है।

शकुन्तला पर अतिशय आसक्ति के उपरान्त दुष्यन्त मृगया से विरत हो जाता है। कालिदास ने यह भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि व्यक्ति एक दूसरे से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी शक्तियों को निर्माण कार्य में प्रवृत्ता कर सकता हैं। शकुन्तला ने दुष्यन्त को वन्यजीवों पर स्वभावतः सुन्दर दृष्टिपात का उपदेश दिया है।

सहवसतिमुपेत्य यः प्रियायाः कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः॥

अतः सेनापति द्वारा मृगया के लाभ बताये जाने पर भी दुष्यन्त प्रसन्न नहीं होते है।

महाकवि कालिदास ने पति धर्म को भी प्रदर्शित किया है। पत्नी को उचित मान सम्मान देना, उसकी सदैव रक्षा करना, यह धर्म पति का है। अनसूया दुष्यन्त को पूछती है कि राजा की पत्नियाँ होती हैं, ऐसी स्थिति में शकुन्तला की आपके राजप्रासाद में शोचनीय स्थिति तो नहीं होगी। तब दुष्यन्त अनसूया को बताते है कि मेरे कुल की दो प्रतिष्ठाएं हैं - एकसमुद्ररूपी मेखला वाली पृथ्वी और दूसरी आपकी यह सखी (शकुन्तला)।

परिग्रह बहुत्वेऽपि दे प्रतिष्ठे कुलस्य मे।
समुद्ररशना चोर्वी सखी च युवयोरियम्॥

राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को गान्धर्व विवाह हेतु प्रेरित किया जाता है। कालिदास ने सामाजिक मर्यादा का पालन शकुन्तला के माध्यम से करवाया है। दुष्यन्त के इस प्रस्ताव को शकुन्तला एक बार ठुकरा देती है। वह स्वयं को पिता के अधीन मानती हुई, बिना स्वीकृति के विवाह हेतु उद्यत नहीं होती है। यह सामाजिक मर्यादा है कि पुत्री बिना पिता की स्वीकृति के विवाह नहीं कर सकती है। कालिदास ने इस मर्यादा की पालना शकुन्तला के माध्यम से करवाने की चेष्टा की है।

शकुन्तला द्वारा सम्पादित गान्धर्व विवाह को कण्व अपने तपोबल से जान लेते है। पुत्री द्वारा योग्यवर चयन को पिता भी उचित ही मानते है। कालिदास ने कण्व को एक आदर्श पिता के रूप में उपस्थापित किया है। इस विवाह का अनुमोदन कण्व द्वारा कर दिया जाता है। कण्व शकुन्तला को कहते है कि योग्य शिष्य को दी गई विद्या के समान तुम अशोचनीय हो गई हो।

सुशिष्य परिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।
अद्यैव ऋषिरक्षितां त्वां भर्तुः सकाशं विसर्जयामीति।

लोक व्यवहार में पुत्री की विदाई के समय मंगलगीत गाये जाते हैं, उसे मांगलिक अलंकरणों से अलंकृत किया जाता हैं। घर के सभी बड़े उसे शुभाशीष देते हैं। कालिदास ने भी उसी सामाजिक स्थिति का चित्रण किया है।

पुत्री की विदाई परिवारजन हेतु कितनी कष्टदायक है, इस सामाजिक रीति का सजीव चित्रण कालिदास ने शकुन्तला विदाई पर किया है। पालिता पुत्री की विदाई पर कण्व अत्यधिक दुःखी होते है, तो उन गृहस्थों की स्थिति निश्चय ही विचारणीय ही हैं।

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

माता - पिता विदाई पर पुत्री को सामाजिक शिक्षा देते हैं। पतिगृह में किसके साथ कैसा व्यवहार सम्पादित करना है ? यहीं दायित्व कालिदास ने कण्व से पूर्ण करवाया है। कण्व मानते हैं कि वनवासी होते हुए भी वे लोक व्यवहारों को जानते है। कण्व शकुन्तला को यहीं शिक्षा प्रदान करते है।

शुश्रूषस्व गुरून् कुरू प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने,
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी यान्त्येवं
गृहिणीपद युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

यह एक सामाजिक रीति है कि पुत्री के विवाहोपरान्त पिता स्वयं को अत्यन्त भाग्यशाली एवं ऋणोन्मुक्त मानता है। उसे लगता है कि उसने अपने जीवन काल में एक बहुत बड़े दायित्व को पूर्ण कर लिया है। यहीं लौकिक स्थिति कण्व भी महसूस करते है। कालिदास ने पिता की उसी निश्चिन्तता को कण्व के मुख मण्डल पर दर्शाया हैं।

अर्थो हि कन्या परकीय एव, तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातोऽस्मि सद्यो विशदान्तरात्मा, चिरस्य निक्षेपमिवोर्पयित्वा॥

विवाहिता के लिए उसका पतिगृह ही सब कुछ माना गया है। अगर विवाहिता अधिक समय तक पिता के घर में रहती है, तो वह लोकापवाद का कारण होती है। इस सामाजिक स्थिति का चित्रण करते हुए कालिदास ने शकुन्तला को शीघ्र ही पतिगृह प्रेषित किया। शार्ङ्गरव उसी स्थिति का वर्णन दुष्यन्त के समक्ष करता है।

सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां
जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते।
अतः समीपे परिणेतुरिष्यते
प्रियाऽप्रिया वा प्रमदा स्वबन्धुभिः॥

कालिदास ने प्राचीन काल से चली आ रही परम्परा एवं लोक व्यवहार का संकेत किया है। 'पद्मपुराण' में भी इसी का चित्रण है :-

कन्या पितृगृहे नैव सुचिरं वासमर्हति।
लोकापवादः सुमहान् जायते पितृवेश्मनि।।

महाकवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में सर्वत्र सामाजिक स्थितियों का अंकन किया है। वे समाज में होने वाली हर गतिविधि के पूर्ण ज्ञाता थे। कालिदास ने 'मेघदूत' में भी सामाजिक व्यवहारों का प्रदर्शन किया है। धन पति कुबेर से शापग्रस्त यक्ष रामगिरि पर निवास करता है। अपने प्रियजनों से अधिक समय तक कोई भी दूर नहीं रह सकता, यहीं स्थिति यहां यक्ष की भी बताई है। जब सन्देश ले जाने वाला कोई नहीं मिलता, तब कालिदास ने मेघ का चयन करवाया है। आषाढ़ माह के प्रथम दिन ही मेघ को देखकर यक्ष आशावान हो जाता है। कालिदास ने मेघ को चेतन बताया है। अतः जब कोई

अतिथि आता है, तो उसका उचित आतिथ्य सत्कार हमारी परंपरा है। इस सामाजिक रीति का पालन कालिदास ने यक्ष से करवाया है। यक्ष उठकर मेघ का स्वागत करता है

स प्रत्यग्रै: कुटजकुसुमै: कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीत: प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ।।

प्रशंसा अमोघ अस्त्र है । कालिदास ने इसका पूर्ण परिचय यक्ष के माध्यम से प्रदान किया है। अगर कार्य पूर्ण करवाना है, तो प्रशंसा आवश्यक है। यक्ष ने भी मेघ को पुष्करावर्तक मेघों का वंशज बताया एवं यह भी प्रदर्शित किया कि आप उच्चकुलोत्पन्न हैं, अत: अगर मेरी प्रार्थना को आप स्वीकार न भी करें तो निरर्थक नहीं होगी ।

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां,
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोन:
तेनाथित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरवन्धुर्गतोऽहं
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।।

लोक व्यवहार में कालिदास अत्यन्त निपुण हैं। किससे, कैसा शिष्टाचार, कब सम्पादित करना है, इस लोक व्यवहार का प्रदर्शन कालिदास ने यक्ष के माध्यम से करवाया है। यक्ष मेघ को कहता है कि उचित स्थान एवं समय को देखकर ही मेरे द्वारा प्रेषित सन्देश को तुम यक्षिणी तक पहुँचाना।

सव्यापारामहनि न तथा पीडयेद् विप्रयोग:,
शके रात्रौ गुरुतरशुचं निर्विनोदां सखीं ते ।
मत्सन्देशै: सुखयितुमलंपश्य साध्वीं निशीथे,
तामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थ: ।।

स्त्रियों का अन्त:करण अत्यन्त कोमल होता है। वियोग उनके लिए असहनीय होता है। अत: संदेश रूप में यक्ष ने यक्षिणी के साथ व्यतीत किये, एक-एक क्षण का परिचय मेघ को दिया है। उससे संदेश रूप में कहता है कि समय की गति सदैव समान नहीं रहती । पहिये के आरे के समान उपर नीचे होती रहती है। अत: समय हमारा भी अच्छा आयेगा, यह विचार कर मैं भी जीवन धारण किये हुए हूँ और तुम भी जीवन धारण करना ।

नन्वात्मानं बह कवणयन्नात्मनैवावलम्बे,
तत्कल्याणि ! त्वमपि नितरां मा गम: कातरत्वम् ।
कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दु:खमेकान्ततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ।।

कालिदास ने सामाजिकों को एक शिक्षा प्रदान की है कि बुरे समय को आँख बन्द कर व्यतीत कर दो । इसके उपरान्त अच्छे समय में विचारणीय समस्त कार्य सरलता से सम्पादित हो सकते हैं।

कालिदास ने जीवन में परमावश्यक विश्वास को माना है । व्यक्ति विश्वास के द्वारा जीवन धारण करता है। उसी विश्वास को उन्होंने प्रदर्शित किया है। यक्ष मेघ से कहता है कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा सन्देश तुम मेरी प्रियतमा तक अवश्य पहुँचा दोगे ।

विलियम वर्ड ज्वर्थ की कविताओं में सामाजिक चेतना – अंग्रेजी साहित्य में क्रान्ति का बिगुल बजाने वाले प्रकृति के अनन्योपासक, प्रकृतिपुत्र महाकवि विलियम वर्डज्वर्थ है। पूर्व से आ रही समस्त साहित्यिक परम्पराओं एवं नियमबद्धता के जाल को तोडकर कवि पीढ़ी को नवीन दिशा देने का श्रेय भी वर्ड्ज्वर्थ को जाता है। वज्वर्थ के लिए कविता कोई मानसिक व्यायाम नहीं वरन् आनंद का उद्रेक है। इसी उद्रेक में मानव का मानव तक, प्रकृति तक और सम्पूर्ण चराचर सृष्टि में स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण करने और पहुँचने का प्रयास है। महाकवि कालिदास के तुल्य विलियम वर्ड्ज्वर्थ की कविताओं में भी सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं ।

वर्ड्ज्वर्थ Ode on Intimation of Immortality कविता में मनुष्य और प्रकृति को सम्बोधित करते हुए कहते है कि मैं तुम्हारे भारी सुख के सम्पूर्ण स्वरूप को महसूस कर रहा हूँ।

"The Fulness of your bliss, I Feel - I Feel it all."

कवि इस कविता के माध्यम से जीवन की नश्वरता का पाठ भी सामाजिकों को देते है। कवि का मानना है कि मनुष्य का अन्त:करण जितना पवित्र बाल्यकाल में होता है, उतना युवा एवं प्रौढ़ावस्था में नहीं रह पाता। उसके अन्त:करण पर नित नवीन खोखलें आडम्बरों की परतें चढ़ती जाती हैं। वह ईश्वरीय स्वरूप को धीरे-धीरे भूलता चला जाता हैं। इस संसार में रम कर अपने उद्देश्य से भटक जाता है। छोटा बालक संसार में मात्र अनुकरणों से ही सीखता चला जाता है। एक बालक जो खिलौनों के मध्य सोया है, वह कुछ समय पश्चात लोगों के व्यापार, प्रेम, झगड़ों से सम्बन्धित नकल करेगा । इस प्रकार वह जीवन पर्यन्त लोगों की नकल ही करता रहेगा ।

वर्ड्ज्वर्थ व्यक्ति को श्रेष्ठ जीवनयापन करने के रहस्य भी बताते है । यह उनकी सामाजिक चेतना का उत्कृष्ट उदाहरण कहा जा सकता है, क्यों कि मानव जीवन सदैव दु:खों से ही व्याप्त रहता है, उसमें भी कवि ने कुछ ऐसा मनुष्य को दिया है, जिससे उनमें नवीन ऊर्जा का संचरण अवश्य ही होगा । कवि का मानना है कि जिस दीव्य ज्योति को मैं बचपन में पाता था, अब वह मुझमें नहीं है, फिर भी हम दु:खी नहीं होंगे। उस दीव्य ज्योति द्वारा छोड़े गए मानसिक प्रभावों से कार्य शक्ति प्राप्त करेंगे। जिसमें प्रथम सहानुभूति है, दूसरा शान्तिदायक विश्वास कि मानव दु:ख क्षणभंगुर हैं, तीसरा मृत्यु के बाद मानव की आत्मा ईश्वरीय लोक में अनन्त सुख प्राप्त करेगी और अन्तिम प्रभाव यह विश्वास है कि महत्वपूर्ण वयस्कता की उम्र में मानव मस्तिष्क चिन्तनशील होता है, हम इन विश्वासों से कार्य शक्ति प्राप्त करेंगे।

In the Primal Sympathy
Which having been must ever be;
In the soothing thoughts that spring
Out of human suffering;
In the faith that looks through death,
20 In years that bring the philosophic mind.

जीवन में संकट क्षणभंगुर हैं। अत: प्राणी को सुख - दु:ख में सम रहते हुए, सदैव ईश्वरीय चिंतन करना चाहिए, क्योंकि वहीं ऊर्जा देने वाला है। वर्ड्ज्वर्थ ने अपनी कविताओं में सदैव मनुष्य को जगाने का ही प्रयास किया है । वे कहते है कि मनुष्य अपने तुच्छ स्वार्थों के वश निरर्थक कार्यों में अपनी शक्ति को खर्च करता है। उस परमात्मा के आप दीव्य शक्ति पुंज है। अत: निरर्थक कार्यों में अपनी शक्तियों को व्यय न करें। The world is too much with us ने कविता में भी मनुष्य को वे धनोपार्जन करने में ही इन्द्रियों की शक्तियों का ह्रास करने वाला बताते हैं । प्रकृति में समस्त शक्तियाँ व्याप्त है। फिर भी मानव भटकता है। थककर स्वयं को एकाकी महसूस करने लगता है ।

Ode to Duty कविता के माध्यम से भी चेतना का संचार किया है। वे कर्त्तव्यपरायणता को श्ईश्वर की आवाज की कठोर पुत्री कहते हैं। वे व्यक्ति को सदैव कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। यहीं कर्त्तव्यपरायणता कर्त्तव्यच्युत व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक प्रकाश है। कवि ने इसे बेंत भी कहा हैं, जिसके डर

से व्यक्ति पदच्युत नहीं होता ।

Stern daughter of the voice of God
O Duty! if that name thou love
Who art a light to guide, a rod
To check the erring, and re prove.

फ्रांस की राज्य क्रान्ति में लोगों की संकीर्ण मानसिकता, धनलोलुपता, स्वार्थवृत्ति से वर्ड्ज्वर्थ अत्यन्त दु:खी हो जाते हैं। अत: वे दूसरों के प्रति सहानूभुति रखने वाले, ईश्वर में आस्था रखने वाले 'मिल्टन' को सम्बोधित करते है। To Milton कविता में वे हमें नैतिक चरित्र, आध्यात्मिक सौन्दर्य, स्वतन्त्र चिंतन शक्ति का पाठ पढ़ाते है ।

वर्ड्ज्वर्थ Resolution and Independence कविता में कर्म करने की सीख देते है। उन्हें यह सीख एक बूढ़ें जोंक पकड़ने वाले व्यक्ति से मिली । उसके लिए आयु नहीं, कर्म ही प्रधान है। जिसके शरीर में शक्ति नही है, ऐसा प्राणी घंटों नदी किनारे जोंक पकड़कर अपना जीवनयापन करता है।

ऐसे प्राणी को देख वज्वर्थ सोचने लगते है कि मुझे ऐसा अस्पष्ट वह प्राणी लग रहा था जिसे ईश्वर ने किसी सुदूर स्थित प्रदेश से अपने दृढ़ निश्चय एवं साहस के उपयुक्त उहाहरण द्धारा मुझमें मानवीय शक्ति भरने के लिए भेजा है।

कवि में उस व्यक्ति ने अटूट आत्मविश्वास भर दिया, कर्म करने की शिक्षा दे दी । कवि मन ही मन विचार करने लगते है कि हे ईश्वर ! भविष्य में मुझे कभी गरीबी का भय सतायेगा, तो मैं उस एकाकी वनस्थली वाले जोंक एकत्रकर्ता को याद कर लूंगा, जिसने मुझमें अतिशय उत्साह एवं उमंग का संचार किया है।

'God Said I be my help and stay secure
I'll think of the leech - Gatherer on the lonely moor.

Peele - Castle कविता में भी सामाजिक चेतना के दर्शन होते है। संघर्षो में व्यक्ति को धैर्य रखकर उनका सामना करना पडता हैं। कवि धैर्य की यह सीख 'पील कासिल' दुर्ग को समुद्र की तुफानी लहरों से टकराते एवं शान्तिपूर्वक खड़े रहते देखकर देते है ।

धैर्य, साहस,संतोष, सहनशीलता आदि को सुखी जीवन के लिए आवश्यक माना है। मानव मात्र के लिए ये सीखें परमावश्यक है, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी है। जीवन सदैव एक समान नहीं चलता है । यह समुद्र के समान है, जहाँ लहरें शान्त भी हैं, तो दूसरी ओर तुफान भी ।

विलियम स्वच्छ, निश्छल एवं पवित्र मन को श्रेष्ठ मानते है। व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यों न हो जाय, उसके मन में मानवता सदैव पोषित होनी चाहिए। Highland Hut कविता में वे नदी के दृष्टान्त से यह सीख देते है। यह नदी पास के पर्वत का स्पर्श कर निकलती है। उस पर्वत को वह सम्मान देती है।

वह निर्मल पर्वत नाला, करता इसको नहीं उपेक्षित
फिर तुम ही क्यों करो ? अगर समुचित विधि से होवें मानवता
शिक्षित और प्रपोषित

The limpid mountain rill avoids it not , And why shouldst thou? It rightly
trained and bred, Huminity is humble.

कवि को जहाँ अवसर प्राप्त हुआ हैं, अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने समाज में चेतना का संचार किया है। वे सदैव निराश्रितों को सहारा देनें, उन्हें प्यार परोसने की भावना ही व्यक्त करते है ।

कवि प्रकृति को क्षति पहुँचाने वाले एवं स्वयं को अत्यन्त सुखी मानने वाले लोगों को भी फटकार लगाते है। वे मानते है कि प्रकृति से ही मानव का जीवन सुरक्षित है। इस प्रकृति को क्षति पहुँचाने का अधिकार आपको किसी ने नही दिया। यह प्रकृति ही आपके कष्टों को समाप्त कर सुखी समृद्ध शाली जीवन देती है । वे Admonition कविता में चेतावनी देते है कि जब हे मानव ! तु अपने इन हाथों से, जो सदैव विनाश रचते हैं, इससे प्रकृति का स्पर्श करेगा, तो तु विनाशलीला ही रचेगा । तु

कवि प्रकृति के विविध दृष्टान्तों से मानव मन में सदैव ऊर्जा का संचार करते है। वे पुष्प, पशु, पक्षी, पहाड़, नदी इनके दृष्टान्तों से आगे बढ़ने की सीख देते है। प्रकृति के इन सुन्दर उपहारों से समाज को नवीन दिशा देने का सारा जिम्मा कवि ने अपने कन्धों पर उठाया है। To the Daisy कविता में फूल के माध्यम से संघर्षो में भी सदैव मानव को आशावादी बने रहना सीखया है।

किन्तु सिखाया तूने उसको
पाना आश्रय अंधड में हो कितने प्रतिकूल भयंकर रखना आशा !
घिरा हुआ हो चाहे कितना दुर्दिवसों का क्रूर कुहासा । चाहे कैसा भी मौसम हो 125

Yet pleased and willing
meek, yielding to the occasion's And all things suffering from all Thy fanction apostolical
call, In peace fulfilling.

कवि की यह हार्दिक इच्छा प्रतीत होती है कि हर प्राणी प्रसन्नता एवं आनन्द पूर्वक जीवन जीये। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रेमपूर्वक मानव को समझाने का प्रयास किया है कि यह संसार, जिसमें असीम दु:ख हैं, किन्तुउन दु:खों में तुम आशावान बने रहना, प्रकृति की गोद में खेलते रहना, तुम्हारें कष्ट स्वत: समाप्त होते चले जायेंगे। कवि की कविताओं में हमें सामाजिक चेतना के पुष्पित – पल्लवित वटवृक्ष दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्यन में दोनों कवियों ने प्रकृति के मध्य जीवन को सुरक्षित एवं सन्तुलित माना है। मनुष्य एक उत्कृष्ट सामाजिक स्थिति को प्राप्त करें, इस निमित विलियम वज्वर्थ और कालिदास दोनों ने सामाजिक समस्याओं को उद्धाटित करने के साथ–साथ समाधानों को भी प्रस्तुत किया हैं । सामाजिक स्थिति की जानकारी कवि की कृतियों से ही ज्ञात होती है। कालिदास एवं वर्ड्ज्वर्थ दोनों के समय में पर्याप्त अंतर है, फिर भी दोनों कवियों की कृतियों में सामाजिक चेतना प्राप्त होती हैं । वे सदैव समाज को नवीन दिशा देते हुए ही दिखाई देते हैं। दोनों की रचनाओं में सामाजिक चेतना के दर्शन होते है । इन दोनों कवियों की कृतियों की विशेषता यह है कि समाज में व्याप्त बुराइयों को बताने के साथ–साथ दोनों ने उसका समाधान भी दिया है। भारतीय एवं पाश्चात्य दो अलग–अलग सभ्यता और संस्कृति में पले बढ़ें कवियों में पर्याप्त साम्य प्राप्त होता है। इनकी सामाजिक चेतना से तात्पर्य मानव मात्र सुसंस्कारी एवं सभ्य हो ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 23
2. वहीं (1/13)
3. वहीं 29 25
4. वहीं (1/17)
5. वहीं (1/19)

6. वहीं (1/25)
7. वहीं (2/3)
8. वहीं 6
9. वहीं (उ. मे. – 48)
10. वहीं (4/18)
11. वहीं (4/22)
12. वहीं (प्रस्तावना) (5/17)
13. मेघदूत (पू. मे. – 4)
14. वहीं 88
15. Ode the Duty (1–4) 492
16. Resolution and Independence (139–140) 252
17. वर्ड्ज्वर्थ का काव्यलोक (यतेन्द्र सिंह)
18. Highland Hut (5-9)
19. Tinterm Abbey (40-42)
20. Solitary Reper..... (31-32) 289
21. To the cuckoo..... (31-32) 289
22. A slumber did..... (5-8)
23. The Fountain..... (41-44)
24. वर्डज्वर्थ का काव्यलोक.88
25. वहीं 205
26. अभिज्ञान शाकुन्तलम् (1/18)
27. मेघदूत (पू. मे. – 15)

****